



# चुद गयी नौकरानी मुझसे

“दोस्तों, लड़की को सीडचूस करके चोदने में बड़ा मज़ा आता है। बस सीडचूस करने का तरीका ठीक होना चाहिये। मैंने अपनी घर की नौकरानी को ऐसे ही सीडचूस करके खूब चोदा। अब सुनाता हूँ उसकी दास्तान। मेरा नाम है वही आपका अपना जाना पहचाना ‘होम अलोन’ अमित। मेरे घर में उल ज़लूल नौकरानियों के काफ़ी [...] ...”

Story By: (amy4ur)

Posted: Wednesday, January 7th, 2004

Categories: [नौकर-नौकरानी](#)

Online version: [चुद गयी नौकरानी मुझसे](#)

# चुद गयी नौकरानी मुझसे

दोस्तों, लड़की को सीडचूस करके चोदने में बड़ा मज़ा आता है। बस सीडचूस करने का तरीका ठीक होना चाहिये। मैंने अपनी घर की नौकरानी को ऐसे ही सीडचूस करके खूब चोदा। अब सुनाता हूँ उसकी दास्तान। मेरा नाम है वही आपका अपना जाना पहचाना 'होम अलोन' अमित।

मेरे घर में उल ज़लूल नौकरानियों के काफ़ी अरसे बाद एक बहुत ही सुन्दर और सेक्सी नौकरानी काम पर लगी। उसका नाम आरती था। 22-23 साल की उमर होगी। सांभला सा रंग था। मध्यम ऊंचाई की और सुडौल बदन, और फ़िगर उसका रहा होगा 33-26-34। शादी शुदा थी। उसका पति कितना किस्मत वाला था, साला उसे खूब चोदता होगा।

बूबस यानि चूचियां ऐसी कि हाथ, बस दबा ही डालो। ब्लाऊज में चूचियां समाती ही नहीं थी। कितनी भी साड़ी से वो ढकती, इधर उधर से ब्लाऊज से उभरते हुए उसकी चूचियां दिख ही जाती थी। झाड़ू लगाते हुए, जब वह झुकती, तब ब्लाऊज के ऊपर से चूचियों के बीच की दरार को छुपा ना पाती थी।

एक दिन जब मैंने उसकी इस दरार को तिरछी नज़र से देखा तो पता लगा कि उसने ब्रा तो पहना ही नहीं था। कहां से पहनती, ब्रा पर बेकार पैसे क्यों खर्च किये जायें।

जब वो टुमकती हुयी चलती, तो उसके चूतड़ बड़े ही मोहक तरीके से हिलते और जैसे कह रहे हों कि मुझे पकड़ो और दबाओ। अपनी पतली सी साटन की साड़ी को जब वो सम्भालती हुयी सामने अपने बुर पर हाथ रखती तो मन करता की काश उसकी चूत को मैं छू सकता, दबा सकता।

करारी, गरम, फूली हुयी और गीली गीली चूत में कितना मज़ा भरा हुआ था। काश मैं इसे चूम सकता, इसके मम्मे दबा सकता, और चूचियों को चूस सकता। और इसकी चूत को चूसते हुए जन्नत का मज़ा ले सकता। और फिर मेरा तना हुए लौड़ा इसकी बुर में डाल कर चोद सकता। हाय मेरा लण्ड !मानता ही नहीं था। बुर में लण्ड घुसने के लिये बेकरार था। लेकिन कैसे। वो तो मुझे देखती ही नहीं थी। बस अपने काम से मतलब रखती और टुमकती हुयी चली जाती।

मैंने भी उसे कभी एहसास नहीं होने दिया कि मेरी नज़र उसे चोदने के लिये बेताब है। अब चोदना तो था ही। मैंने अब सोच लिया की इसे सीडचूस करना ही होगा। धीरे धीरे सीडचूस करना पड़ेगा वरना कहीं मचल जाये या नाराज हो जायें तो भाण्डा फूट जायेगा। मैंने आरती से थोड़ी थोड़ी बातें करना शुरु किया। एक दिन सुबह उसे चाय बनने को कहा। चाय उसके नरम नरम हाथों से जब लिया तो लण्ड उछला।

चाय पीते हुए कहा- आरती, चाय तुम बहुत अच्छी बना लेती हो।  
उसने जवाब दिया, “बहुत अच्छा बाबूजी।”

अब करीब करीब रोज़ मैं चाय बनवाता और उसकी बड़ाई करता। फिर मैंने एक दिन कॉलेज जाने के पहले अपनी कमीज इस्त्री करवायी।

“आरती तुम इस्त्री भी अच्छी ही कर लेती हो।”

“ठीक है बाबूजी,” उसने प्यारी सी अवाज़ में कहा। जब घर में कोई नहीं होता, तब मैं उसे इधर उधर की बातें करता। जैसे,

“आरती, तुम्हारा आदमी क्या करता है?”

“साहब, वो एक मिल मैं नौकरी करता है।”

“कितने घण्टे की ड्यूटी होती है ?” मैंने पूछा।

“साहब, 10-12 घण्टे तो लग ही जाते हैं न। कभी कभी रात को भी ड्यूटी लग जाती है।”

“तुम्हारे बच्चे कितने हैं ?” मैंने फिर पूछा।

“अभी कितने बच्चे हैं ?”

शरमाते हुए उसने जवाब दिया, “अभी तो एक लड़की है, 2 साल की।”

“उसे क्या घर में अकेला छोड़ कर आती हो ?” मैं पूछता रहा।

“नहीं, मेरी बूढ़ी सास है ना। वो सम्भाल लेती है।”

“तुम कितने घरों में काम करती हो ?” मैंने पूछा।

“साहब, बस आपके और एक नीचे घर में।”

मैंने फिर पूछा, “तो तुम दोनो का काम तो चल ही जाता होगा।”

“साहब, चलता तो है, लेकिन बड़ी मुश्किल से। मेरा आदमी शराब में बहुत पैसे बरबाद कर देता है।”

अब मैंने एक इशारा देना उचित समझा। मैंने सम्भलते हुए कहा, “ठीक है, कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी मदद करूंगा।”

उसने मुझे अजीब सी नज़र से देखा, जैसे पूछ रही हो ‘क्या मतलब है आपका ?’

मैंने तुरन्त कहा, “मेरा मतलब है, तुम अपने आदमी को मेरे पास लाओ, मैं उसे समझाऊंगा।”

“ठीक है साहब.” कहाते हुए उसने ठण्डी सांस भरी।

इस तरह, दोस्तों मैंने बातों का सिलसिला काफ़ी दिनों तक जारी रखा और अपने दोनो के

बीच की झिझक को मिटाया। एक दिन मैंने शरारत से कहा,

“तुम्हारा आदमी पागल ही होगा। अरे उसे समझना चाहिये। इतनी सुन्दर पत्नी के होते हुए, उसे शराब की क्या ज़रूरत है।”

औरत बहुत तेज़ होती है दोस्तों। उसने कुछ कुछ समझ तो लिया था लेकिन अभी तक अहसास नहीं होने दिया अपनी ज़रा सी भी नाराजगी का। मुझे भी ज़रा सा हिन्ट मिला कि अब तो ये तस्वीर पर उतर जायेगी। मौका मिले और मैं इसे दबोचूँ। चुदवा तो लेगी और आखिर एक दिन ऐसा एक मौका लगा। कहते हैं ऊपर वाले के यहां देर है लेकिन अन्धेर नहीं।

रविवार का दिन था। पूरी फ़ेमिली एक शादी में गयी थी। मैंने पढायी का नुकसान की वजह बताकर नहीं गया। कह कर गयी थी “आरती आयेगी, घर का काम ठीक से करवा लेना।”

मैंने कहा, “ठीक है.”

मेरे दिल में लड्डू फूटने लगे और लौड़ा खड़ा होने लगा। वो आयी, उसने दरवाज़ा बन्द किया और काम पर लग गयी। इतने दिन की बातचीत से हम खुल गये थे और उसे मेरे ऊपर विश्वास सा हो गया था इसी लिये उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया था। मैंने हमेशा की तरह चाय बनवायी और पीते हुए चाय की बड़ाई की। मन ही मन मैंने निश्चय किया की आज तो पहल करनी ही पड़ेगी वरना गाड़ी छूट जायेगी। कैसे पहल करे? आखिर में ख्याल आया कि भैया सबसे बड़ा रुपैया। मैंने उसे बुलया और कहा,

“आरती, तुम्हे पैसे की ज़रूरत हो तो मुझे ज़रूर बताना। झिझकना मत।”

“साहब, आप मेरी तनखा काट लोगे और मेरा आदमी मुझे डाँटेगा।”

“अरे पगली, मैं तनखा की बात नहीं कर रहा। बस कुछ और पैसे अलग से चाहिये तो मैं दूंगा मदद के लिये। और किसी को नहीं बताऊंगा। बशर्ते तुम भी ना बताओ तो।”

और मैं उसके जवाब का इनतज़ार करने लगा।

“मैं क्यों बताने चली। आप सच में मुझे कुछ पैसे देंगे?” उसने पूछा।

बस फिर क्या था। कुड़ी पट गयी। बस अब आगे बढ़ना था और मलाई खानी थी।

“ज़रूर दूंगा आरती। इससे तुम्हें खुशी मिलेगी ना,” मैंने कहा।

“हां साहब, बहुत आराम हो जायेगा।” उसने इठलाते हुए कहा।

अब मैंने हल्के से कहा, “और मुझे भी खुशी मिलेगी। अगर तुम भी कुछ ना कहो तो और जैसा मैं कहूं वैसा करो तो? बोलो मंज़ूर है?”

ये कहते हुए मैंने उसे 500 रुपये थमा दिये।

उसने रुपये टेबल पर रखा और मुसकुराते हुए पूछा- क्या करना होगा साहब?

“अपनी आंखें बन्द करो पहले।” मैं कहते हुए उसकी तरफ़ थोड़ा सा बढ़ा, “बस थोड़ी देर के लिये आंखें बन्द करो और खड़ी रहो।”

उसने अपनी आंखें बंद कर ली। मैंने फिर कहा, “जब तक मैं ना कहूं, तुम आंखें बंद ही रखना, आरती। वरना तुम शर्त हार जाओगी।”

“ठीक है, साहब,” शरमाते हुए आंखें बंद कर वो खड़ी थी।

मैंने देखा की उसके गाल लाल हो रहे थे और होंठ कांप रहे थे। दोनो हाथों को उसने सामने अपनी जवान चूत के पास समेट रखा था।

मैंने हल्के से पहले उसके माथे पर एक छोटा सा चुम्बन लिया। अभी मैंने उसे छुआ नहीं था। उसकी आंखें बंद थीं। फिर मैंने उसकी दोनों पलकों पर बारी बारी से चुम्बन लिया। उसकी आंखें अभी भी बन्द थीं। फिर मैंने उसके गालों पर आहिस्ता से बारी बारी से चूमा। उसकी आंखें बन्द थीं। इधर मेरा लण्ड तन कर लोहे की तरह कड़ा और सख्त हो गया था।

फिर मैंने उसकी ठोड़ी (चिन) पर चुम्बन लिया।

अब उसने आंखें खोली और सिर्फ़ पूछते हुए कहा, “साहब ?”

मैंने कहा, “आरती, शर्त हार जाओगी। आंखें बन्द।”

उसने झट से आंखें बन्द कर लीं। मैं समझ गया, लड़की तैयार है, बस अब मज़ा लेना है और चुदायी करनी है।

मैंने अब की बार उसके थिरकते हुए होठों पर हल्का सा चुम्बन किया। अभी तक मैंने छुआ नहीं था उसे। उसने फिर आंखें खोली और मैंने हाथ के इशारे से उसकी पलकों को फिर ढक दिया। अब मैं आगे बढ़ा, उसके दोनों हाथों को सामने से हटा कर अपनी कमर के चारों तरफ़ लपेट लिया और उसे अपनी बांहों में समेटा और उसके कांपते होठों पर अपने होठ रख दिये और चूमता रहा। कस कर चूमा अबकी बार।

क्या नरम होठ थे मानो शराब के प्याले। होठों को चूसना शुरू किया और उसने भी जवाब देना शुरू किया। उसके दोनों हाथ मेरी पीठ पर घूम रहे थे और मैं उसके गुलाबी होठों को खूब चूस चूस कर मज़ा ले रहा था। तभी मुझे महसूस हुआ कि उसकी चूचियां जो कि तन गयी थी, मेरे सीने पर दब रही थी। बायें हाथ से मैं उसकी पीठ को अपनी तरफ़ दबा रहा था, जीभ से उसकी जीभ और होठों को चूस रहा था, और दायें हाथ से मैंने उसकी साड़ी के पल्लू को नीचे गिरा दिया।

दाया हाथ फिर अपने आप उसकी दायीं चूची पर चला गया। और उसे मैंने दबाया। हाय हाय क्या चूची थी। मलायी थी बस मलायी। अब लण्ड फुंकारे मार रहा था। बांये हाथ से

मैंने उसके चूतड़ को अपनी तरफ़ दबाया और उसे अपने लण्ड को महसूस करवाया ।

शादीशुदा लड़की को चोदना आसान होता है क्योंकि उन्हे सब कुछ आता है । घबराती नहीं है । ब्रा तो उसने पहनी ही नहीं थी, ब्लाऊज के बटन पीछे थे, मैंने अपने दांये हाथ से उन्हें खोल दिया और ब्लाऊज को उतार फेका । चूचियां जैसे कैद थी, उछल कर हाथों में आ गयी । एकदम सख्त लेकिन मलायी की तरह प्यारी भी । साड़ी को खोला और उतारा । बस अब साया बचा था । वो खड़ी नहीं हो पा रही थी । उसकी आंखे अभी भी बन्द थी । मैं उसे हल्के हल्के से खींचते हुए अपने बेडरूम में ले आया और लेटा दिया । अब मैंने कहा, “आरती रानी अब तुम आंखे खोल सकती हो ।”

“आप बहुत पाजी है साहब”, शरमाते हुए उसने आंखे खोली और फिर बन्द कर ली । मैंने झट से अपने कपड़े उतारे और नंगा हो गया । लण्ड तन कर उछल रहा था । मैंने उसका साया जल्दी से खोला और खींच कर उतारा । जैसे वो चुदवाने को तैयार ही थी । कोई अन्डरवियर नहीं पहना हुआ था । मैंने बात करने के लिये कहा,

“ये क्या, तुम्हारी चूत तो नंगी है । चड्डी नहीं पहनती क्या ।”

“नहीं साहब, सिर्फ़ महीना में पहनती हू ।” और शरमाते हुए कहा, “साहब, परदे खींच कर बन्द करो ना । बहुत रोशनी है ।” मैंने झट से परदों को बन्द किया जिससे थोड़ा अन्धेरा हो गया और मैं उसके ऊपर लेट गया । होठों को कस कर चूमा, हाथों से चूचियां दबायी और एक हाथ को उसके बुर पर फिराया । घुंघराले बाल बहुत अच्छे लग रहे थे चूत पर ।

फिर थोड़ा सा नीचे आते हुए उसकी चूची को मुंह में ले लिया । अहा, क्या रस था । बस मज़ा बहुत आ रहा था । अपनी एक अंगुली को उसकी चूत के दरार पर फिराया और फिर उसके बुर में घुसाया । अंगुली ऐसे घुसी जैसे मक्खन मैं छुरी । चूत गरम और गीली थी । उसकी सिसकारियां मुझे और भी मस्त कर रही थी । मैंने उसकी चूत चीरते हुए कहा,



“आरती रानी, अब बोलो क्या करूं?”

“साहब, मत तड़पाईये, बस अब कर दीजिये।” उसने सिसकारियां लेते हुए कहा।

मैंने कहा, “ऐसे नहीं, बोलना होगा, मेरी जान।”

मुझे अपने करीब खींचते हुए कहा, “साहब, डाल दीजिये ना।”

“क्या डालूं और कहां?” मैंने शरारत की। दोस्तो चुदायी का मज़ा सुनने में भी बहुत आता है।

“डाल दीजिये ना अपना ये लौड़ा मेरी चूत के अन्दर।” उसने कहा और मेरे होठों से अपने होठ चिपका लिये। इधर मेरे हाथ उसकी चूचियों को मसलते ही जा रहे थे। कभी खूब दबाते, कभी मसलते, कभी मैं चूचियों को चूसता कभी उसके होठों को चूसता।

अब मैंने कह ही दिया- हां रानी, अब मेरा ये लण्ड तेरी बुर में घुसेगा। बोलो चोद दूं?

“हां हां, चोदिये साहब, बस चोद दीजिये।” और वो एकदम गरम हो गयी थी।

फिर क्या था, मैंने लण्ड उसके बुर पर रखा और घुसा दिया अन्दर। एकदम ऐसे घुसा जैसे बुर मेरे लण्ड के लिये ही बनी था। दोस्तों, फिर मैंने हाथों से उसकी चूचियों को दबाते हुए, होठों से उसके गाल और होठों को चूसते हुए, चोदना शुरू किया। बस चोदता ही रहा। ऐसा मन कर रहा था की चोदता ही रहूं। खूब कस कस कर चोदा। बस चोदते चोदते मन ही नहीं भर रहा था। क्या चीज़ थी यारों, बड़ी मस्त थी। वो तो खूब उछल उछल कर चुदवा रही थी।

“साहब, आप बहुत अच्छा चोद रहे हैं, चोदिये खूब चोदिये, चोदना बन्द मत कीजिये”, और उसके हाथ मेरी पीठ पर कस रहे थे, टांगे उसने मेरी चूतड़ पर घुमा कर लपेट रखी थी और

चूतड़ से उचल रही थी। खूब चुदवा रही थी। और मैं चोद रहा था। मैं भी कहने से रुक ना सका,

“आरती रानी, तेरी चूत तो चोदने के लिये ही बनी है। रानी, क्या चूत है। बहुत मज़ा आ रहा है। बोल ना कैसी लग रही है ये चुदायी।”

“बस साहब, बहुत मजा आ रहा है, रुकिये मत, बस चोदते रहिये, चोदिये चोदिये चोदिये।” इस तरह हम ना जाने कितनी देर तक मज़ा लेते हुए खूब कस कस कर चोदते हुए झड़ गये।

क्या चीज़ थी, वो तो एकदम चोदने के लिये ही बनी थी। अभी मन नहीं भरा था।

20 मिनट के बाद मैंने फिर अपना लण्ड उसके मुंह में डाला और खूब चुसवाया। हमने 69 की पोजिशन ली और जब वो लण्ड चूस रही थी मैंने उसकी चूत को अपनी जीभ से चोदना शुरू किया। खास कर दूसरी बार तो इतना मज़ा आया की मैं बता नहीं सकता। क्योंकि अब की बार लण्ड बहुत देर तक चोदता रहा। लण्ड को झड़ने में काफ़ी समय लगा और मुझे और उसे भरपूर मज़ा देता रहा।

कपड़े पहनने के बाद मैंने कहा, “आरती रानी, बस अब चुदवाती ही रहना। वरना ये लण्ड तुम्हे तुम्हारे घर पर आकर चोदेगा।”

“साहब, आप ने इतनी अच्छी चुदायी की है, मैं भी अब हर मौके में आपसे चुदवाऊंगी। चाहे आप पैसे ना भी दो।”

कपड़े पहनने के बाद भी मेरे हाथ उसकी चूचियों को हल्के हल्के मसलते रहे। और मैं उसके गालों और होठों को चूमता रहा। एक हाथ उसके बुर पर चला जाता था और हल्के से उसकी चूत को दबा देता था।

“साहब अब मुझे जाना होगा।” कह कर वो उठी।

मैंने उसका हाथ अपने लण्ड पर रखा- रानी एक बार और चोदने का मन कर रहा है। कपड़े नहीं उतारूंगा।

दोस्तो, सच में लण्ड कड़ा हो गया था और चोदने की लिये मैं फिर से तैयार था। मैंने उसे झट से लेटाया, साड़ी उठायी, और अपना लौड़ा उसके बुर में पेल दिया। अबकी बार उसे भचाभच करके खूब चोदा और कस कर चोदा और खूब चोदा और चोदता ही रहा। चोदते चोदते पता नहीं कब लण्ड झड़ गया और मैंने कस कर उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया। चूमते हुए चूचियों को दबाते हुए, मैंने अपना लण्ड निकाला और अन्त में उसे विदा किया।

कैसी लगी ये नौकरानी के सथ मेरी मस्ती भरी चुदायी, सच सच बताना। बताना ज़रूर। मैं इन्तज़ार करूंगा।

आपका प्यारा दोस्त अमित

## Other stories you may be interested in

### नौकरानी के पति के मोटे लंड के साथ गंदा सेक्स

हैल्लो पाठको ! मेरा नाम मन्जू जैन है. मैं आपको अपनी एक कहानी बताना चाहती हूँ जब मैंने पहली बार सेक्स किया था. यह कहानी उसी के बारे में है. उस वक्त मैं केवल 18 साल की थी. उस वक्त हमारे [...]

[Full Story >>>](#)

### दूध में भांग मिला के नौकरानी के साथ सेक्स

मैं आपको ऐसी मस्त सेक्स कहानी सुनाने वाला हूँ, जिसे आप सुनकर काफी आनंदित हो जाएंगे. यह कहानी काफी मजेदार है, साथ ही रोमांचक भी है. आप भी काफी सावधानी से ऐसा करके किसी के साथ इस प्रकार का सेक्स [...]

[Full Story >>>](#)

### मैं कैसे बन गई चुदक्कड़-5

दोस्तो, आपकी कोमल फिर से हाज़िर है अपनी इस कहानी के अगले और अंतिम भाग के साथ. पिछले भाग में आपने पढ़ा कि कैसे जोन्स ने मेरी चुत और गांड की बैड बजा दी थी. फिर मैं बाहर स्वीमिंग पूल [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी दीदी की नौकरों से चुदाई देखी

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम अंकित है। यह कहानी मेरी मामा की लड़की है, वो मेरी ममेरी दीदी है। उनकी चुदाई मैंने अपनी आँखों से देखी थी। उस वक्त मेरी उम्र 20 साल थी और राशिका दीदी की उम्र 24 साल [...]

[Full Story >>>](#)

### मामी को रिटर्न गिफ्ट : रसीली चुदाई-1

मेरी साली ममता और उसकी सहेली सुधा की शादी एक साथ ही हुई थी. मगर शादी के बाद कोई ऐसा संयोग नहीं बन पाया कि दोनों में से कोई भी अपने जीजा के साथ मिल सके. एक दिन ऐसा संयोग [...]

[Full Story >>>](#)

